ICAR-Indian Veterinary Research Institute, मुक्तेश्वर द्वारा ग्राम खेरदा में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (ICAR-IVRI), मुक्तेश्वर द्वारा ग्राम खेरदा में किसानों के लिए "संतुलित उर्वरक उपयोग एवं मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के संयुक्त निदेशक डॉ. यशपाल सिंह मलिक के निर्देशन में किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को मिट्टी परीक्षण, संतुलित उर्वरक उपयोग, जैविक खेती तथा मिट्टी की उर्वरता संरक्षण के प्रति जागरूक करना था।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. मनीष तोमर एवं उनकी टीम द्वारा किसानों को मृदा स्वास्थ्य एवं संतुलित उर्वरक उपयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में किसानों को बताया गया कि वर्तमान समय में रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित उपयोग के कारण मिट्टी की उर्वरता लगातार कम हो रही है, जिससे उत्पादन लागत बढ़ने के साथ-साथ फसलों की गुणवत्ता भी प्रभावित हो रही है। ऐसी परिस्थितियों में मिट्टी परीक्षण आधारित खेती अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

प्रशिक्षण के दौरान किसानों को मिट्टी का नमूना (Soil Sample) लेने की वैज्ञानिक विधि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। किसानों को बताया गया कि मिट्टी का नमूना खेत के विभिन्न स्थानों से उचित गहराई से लेना चाहिए तथा नमूना लेते समय किन-किन सावधानियों का पालन करना आवश्यक है। साथ ही यह भी बताया गया कि मिट्टी के नमूनों को किस प्रकार एकत्रित कर प्रयोगशाला में भेजा जाता है तथा मृदा परीक्षण रिपोर्ट के आधार पर किस प्रकार संतुलित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग किया जा सकता है।

डॉ. मनीष तोमर ने किसानों को संबोधित करते हुए बताया कि संतुलित उर्वरक उपयोग से न केवल उत्पादन लागत कम की जा सकती है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता को लंबे समय तक बनाए रखते हुए बेहतर एवं गुणवत्तायुक्त उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आवश्यकता से अधिक रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है तथा इससे भूमि की उत्पादक क्षमता धीरे-धीरे कम होने लगती है। किसान भाइयों को यह भी बताया गया किस प्रकार से हम मृदा की जांच कर सकते हैं और जांच के पश्चात संतुलित उर्वरकों का उपयोग कर मिट्टी मृदा की गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं प्रशिक्षण के दौरान यह भी बताया गया कि हमें किस प्रकार से निश्चित खेती के दौरान उर्वरकों एवं सिंचाई एवं मेड बंदी का किस प्रकार से प्रबंध करना चाहिए जिससे कि बारिश से पानी को खेत में अधिक समय तक

सिंचाई के लिए उपयोग में लाया जा सके, वह मिश्रित खेती के दौरान हॉर्टिकल्चर पौधे व गेहूं आलू इत्यादि को संतुलित मात्रा में देना चाहेये ।

कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने प्रशिक्षण में गहरी रुचि दिखाई तथा मृदा परीक्षण एवं संतुलित उर्वरक उपयोग से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनका विशेषज्ञों द्वारा विस्तार से समाधान किया गया।
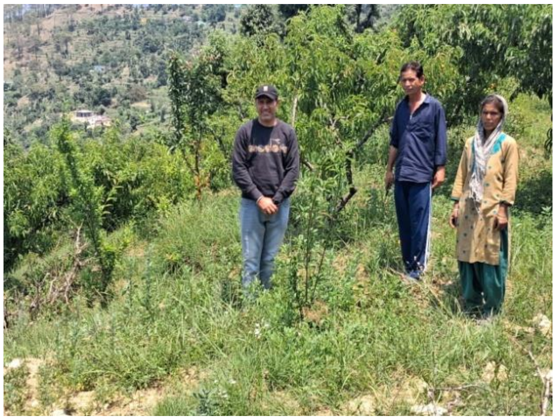
आयोजित इस कार्यक्रम के माध्यम से किसानो कोसंतुलित उर्वरक उपयोग एवं जैविक खेती की के प्रति जागरूक किया गया। संस्थान केनिदेशक डॉ. राघवेंद्र भट्टाने कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए पूरी टीम को बधाई दी।